एकलव्य का प्रकाशन

मेघ की छाया

प्रभात
कला: अतनु राँय

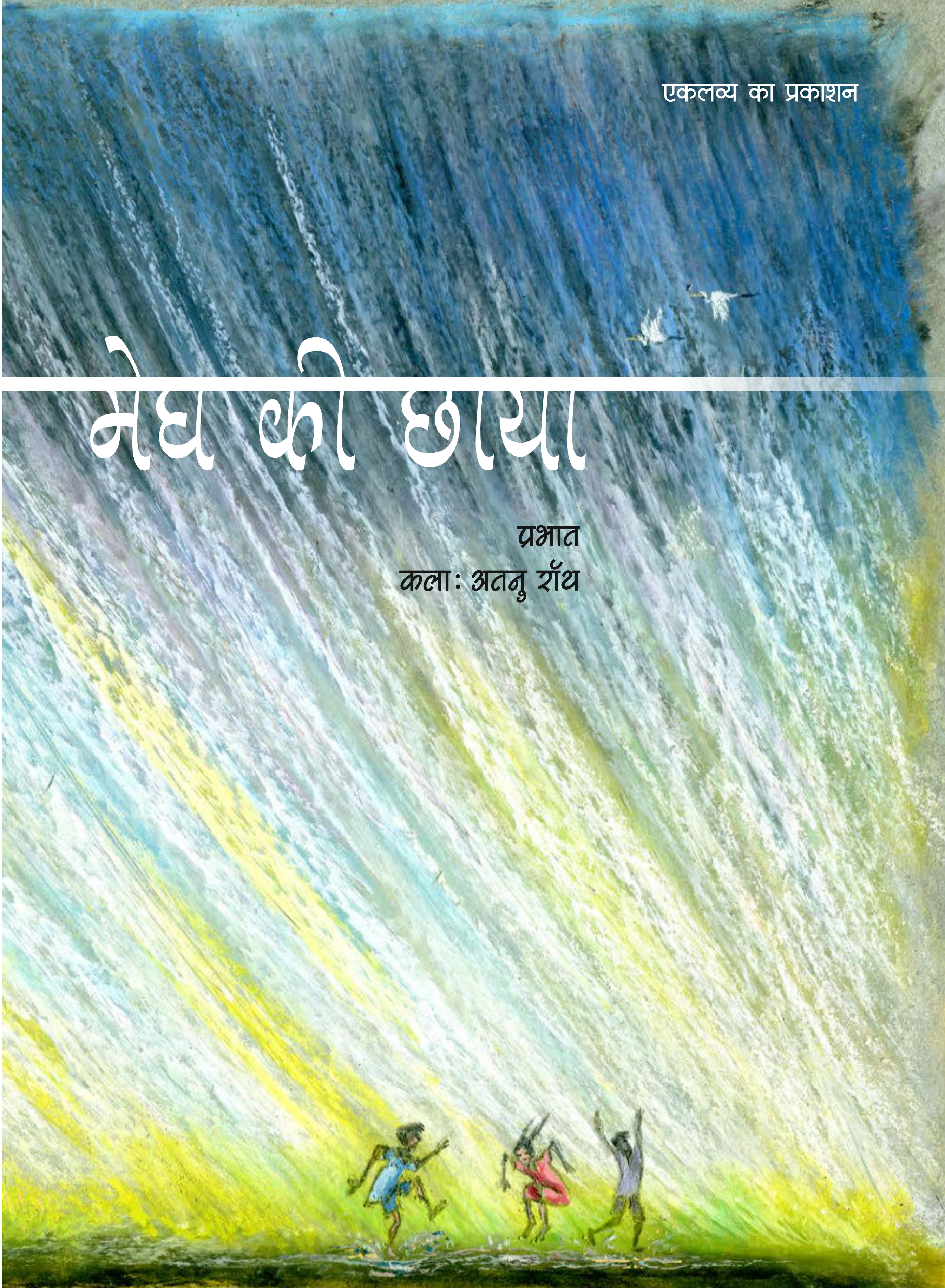

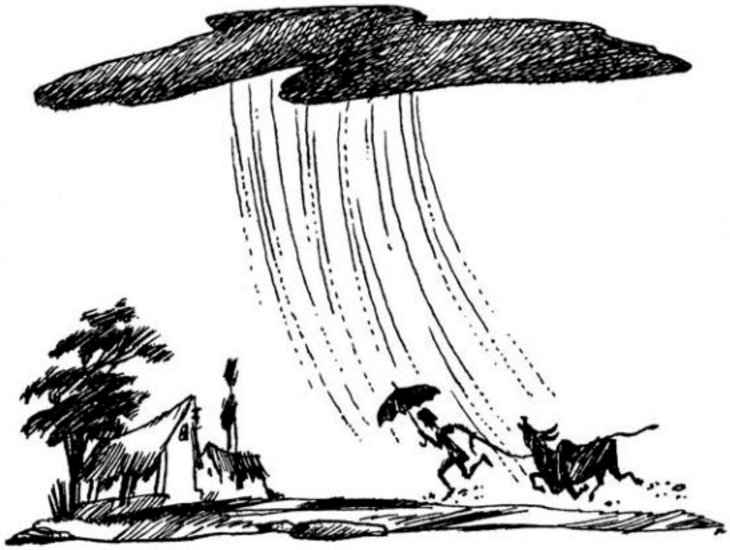

मेघ की छाया

प्रभात

कलाः अतनु रॉय

एकलव्य का प्रकाशन

हाथी आया गाँव में
हाथी आया
हाथी आया
सब चिल्लाए गाँव में...

पेज 12 पर है यह कविता। इसे एक बार मन में पढ़ लो। थोड़ी देर बाद जब इसके अर्थ मन में घुलने लग जाएँ तो इसे एक बार फिर पढ़ो। भाव के साथ बोलकर। जैसे अपने किसी दोस्त को सुनाते हैं वैसे। कहते हैं कविता कुछ पढ़कर समझ में आती है और समझने को बचे हिस्से में से कुछ सुनकर समझ में आती है।

इस कविता में गाँव की एक साधारण घटना है। हाथी का आना। हालाँकि यह कविता हाथी आने की घटना के बारे में नहीं है। जैसे घर बनाने में ईंट-गारा लगता है। घर को देखो तो भी वही ईंट-गारा दिखता है। पर घर एक जगह होती है जहाँ लोग मिल-जुलकर रहते हैं। घर की मिल-जुल ऊपर से कहाँ दिखती है? इस कविता में भी ठीक यही बात है। हाथी के आ जाने की घटना सिर्फ कविता का ईंट-गारा है। असल बात है कि कैसे इतने सारे लोग किसी एक घटना से जुड़े हैं। हाथी का आना जैसे गाँव की झील में उठ गई एक तरंग है जो झील के पूरे पानी को छू आती है। उनमें एक हलचल पैदा करती है। कविताएँ हमें बेहतर दुनिया के सपने भी दिखाती हैं। जैसे यह कविता एक सपने के गाँव का सपना लगती है। एक गाँव है जहाँ के लोगों का जीवन एक-दूसरे से गुँथा हुआ है। इस कदर कि एक हाथी तो क्या एक चींटी आती तो भी एक हलचल होती। इस कविता की मिठास इसी गुथन में है। इस संग्रह की लगभग सभी कविताएँ बहुत सारे लोगों के जुड़ावों की कविताएँ हैं। उनको पढ़कर हमारे मन में उतर आने वाला मज़ा इसी मिल-जुल का है।

इस मिल-जुल का ही तो असर है कि गाँव में जो भी हाथी का आना देख रहा है दूसरे को बताता है — उपले थाप रही काकी चिल्लाकर बता रही है तो काका यही बात बताने के लिए दौड़ लगा रहे हैं, जैसे वे सबसे ज़्यादा लोगों को सबसे पहले बताना चाहते हैं कि किसी से हाथी को आता देखना छूट न जाए। दादी बूढ़ी हैं। उनका अनुभव सबसे ज़्यादा है। वे कई बार हाथी को आते देख चुकी हैं। उन्हें याद है कि हाथी इस बार बड़े दिनों में आया है। जैसे, हाथी को तो कब का आ जाना था।

इस कविता के बड़े-बुजुर्ग बच्चों जैसे दौड़-पुकार कर रहे हैं। बता रहे हैं कि हाथी आया है। और बच्चे? ...वे मज़े से एक पेड़ की छाँव में खड़े हाथी को आते देख रहे हैं। ऐसा क्यों? क्या कविता में दिख रहा हाथी हाथी न होकर कुछ और है? कोई मुश्किल है? हाथी की तरह विशाल? गाँव में सब एक-दूसरे को इसके प्रति सचेत कर रहे हैं? हाथी हो या हाथी के रूप में आती कोई मुश्किल — दोनों ही अर्थों में कविता का केन्द्रीय भाव मिल-जुल, साथ, एकजुटता बना रहता है।

इस संग्रह का नाम है — मेघ की छाया। इसकी कविताएँ मेघों की तरह ही हैं। इन्हें अगर मन में पढ़ोगे तो मन भीग जाएगा पर उनकी गड़गड़ाहट-झनझनाहट छूट जाएगी। बोलकर-गुनगुनाकर पढ़ोगे तो ये और रसीली हो आएँगी।

— सुशील शुक्ल
एकलव्य, भोपाल

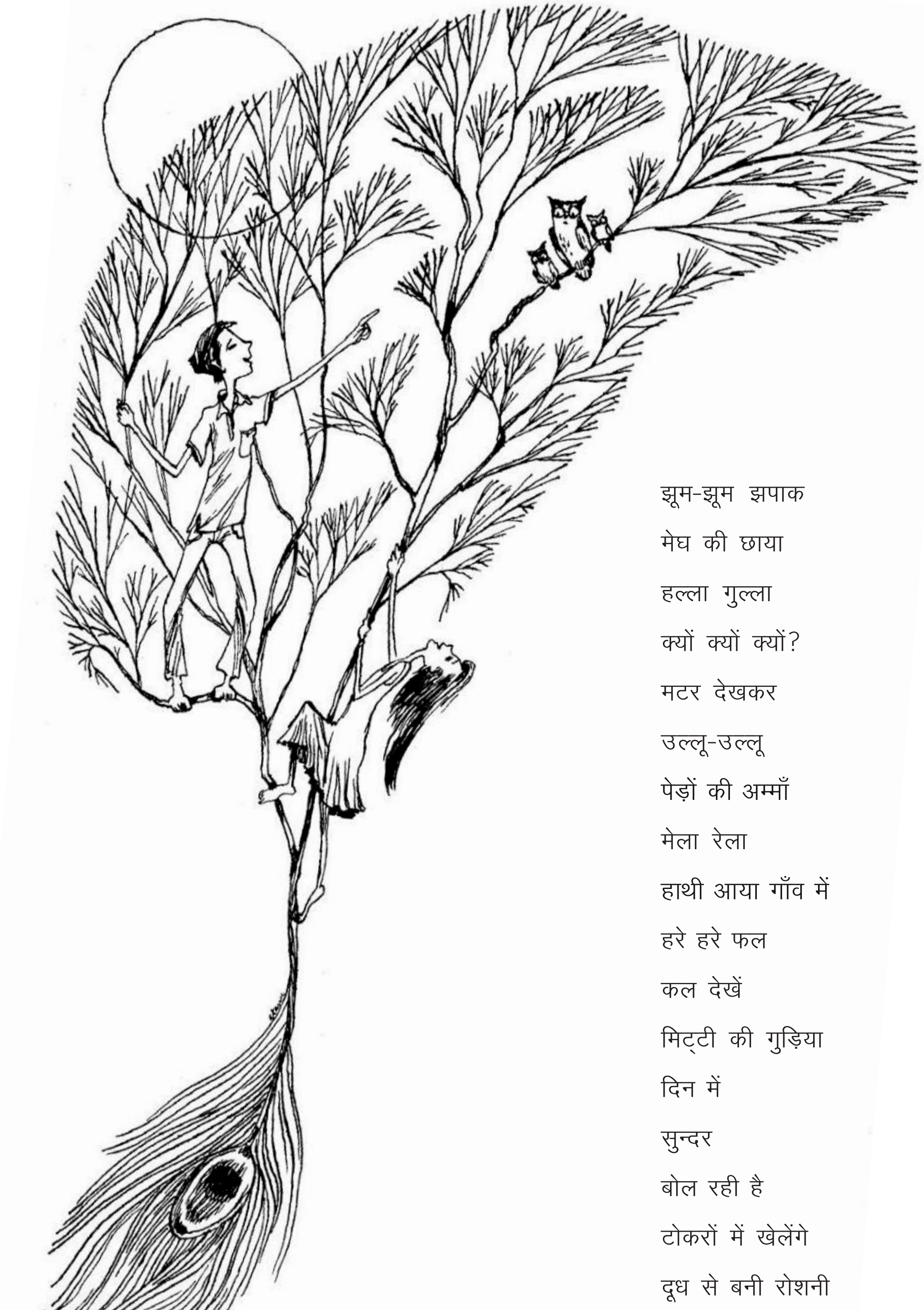

झूम-झूम झपाक

मेघ की छाया

हल्ला गुल्ला

क्यों क्यों क्यों?

मटर देखकर

उल्लू-उल्लू

पेड़ों की अम्माँ

मेला रेला

हाथी आया गाँव में

हरे हरे फल

कल देखें

मिट्टी की गुड़िया

दिन में

सुन्दर

बोल रही है

टोकरों में खेलेंगे

दूध से बनी रोशनी

झूम-झूम झपाक

झूम-झूम झपाक
झूम-झूम झपाक
झूम-झूम झपाक
टीचर के जाते ही
बच्चे बोले –
तपाक तपाक
तपाक

छम छम छमाक
छम छम छमाक
छम छम छमाक
छुट्टी के होते ही
बच्चे नाचे
छमाक छमाक
छमाक

धम धम धमाक
धम धम धमाक
धम धम धमाक
स्कूल से घर आते ही
बच्चे कूदे
धमाक धमाक
धमाक

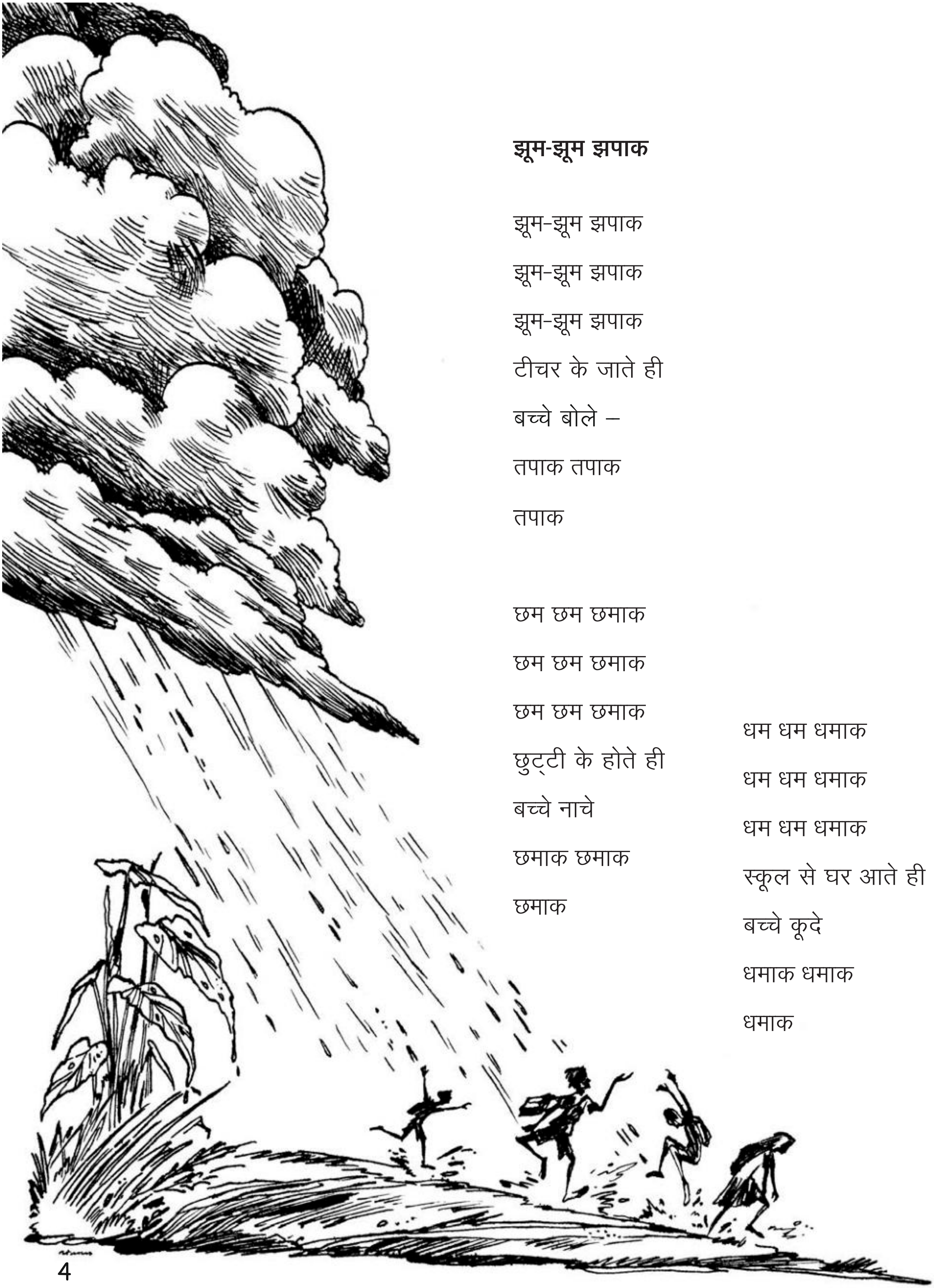

मेघ की छाया

मेघ ना सही
छुएँ मेघ की छाया
सोच रही खेतों की
धूल सी काया

हवा आई
घटा लाई
झम बरसाया

खेतों ने छू ली
मेघों की
जल भरी काया

हल्ला गुल्ला

हल्ला गुल्ला
हल्ला गुल्ला

किसकी ये दुम
और किसका पुछल्ला

चूहे की ये दुम
और मोर का पुछल्ला
हल्ला गुल्ला
हल्ला गुल्ला

किसकी ये पूँछ
और किसकी ये मूँछ

पिल्ले की है पूँछ
बागड़बिल्ले की है मूँछ
हल्ला गुल्ला
हल्ला गुल्ला

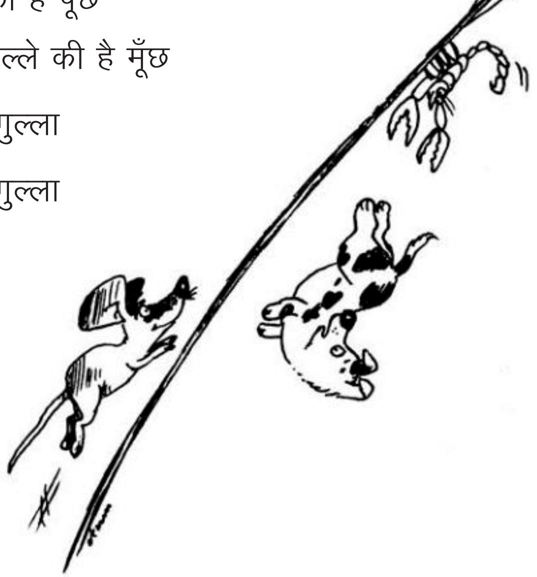

किसके हैं पंख
और किसका है डंक

गौरैया के पंख
और बिच्छू का है डंक
हल्ला गुल्ला
हल्ला गुल्ला

क्यों क्यों क्यों?

पेड़ से पत्ते झड़ते क्यों हैं
बादल इतना उड़ते क्यों हैं
आँख में आँसू आते क्यों हैं
आग में उँगली जलती क्यों है
पीठ में खुजली चलती क्यों है
गिरकर मटका फूटे क्यों है
नभ का तारा टूटे क्यों है

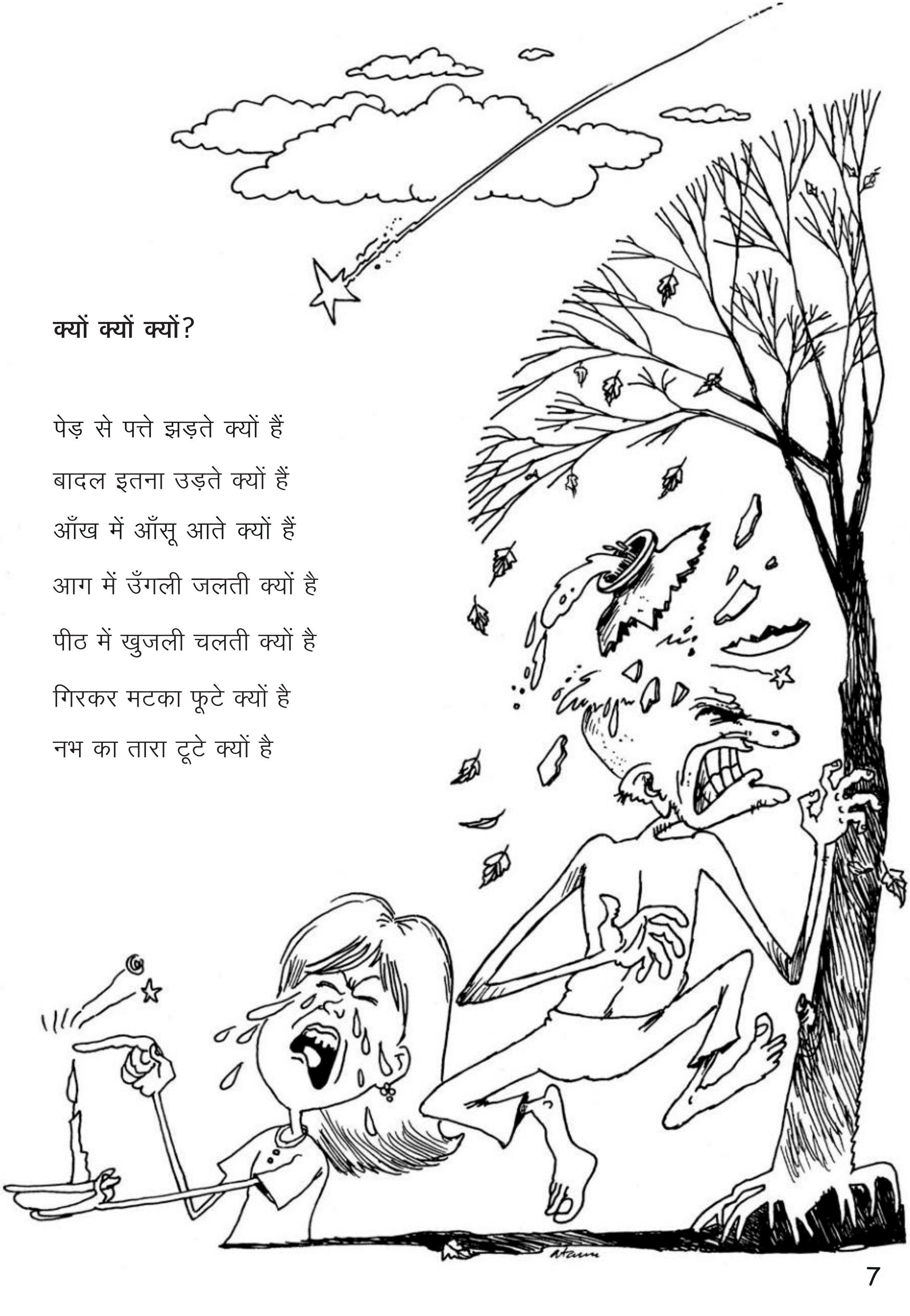

मटर देखकर

मटर देखकर कच्ची
माँ से बोली बच्ची

माँ तुम कितनी हरी-हरी हो
हरे मटर सी हरी-भरी हो
भरी टोकरी रखी हुई है
क्या वो तुमने चखी हुई है
नहीं चखी तो चलो चखें
सूख जाएगी रखे-रखे

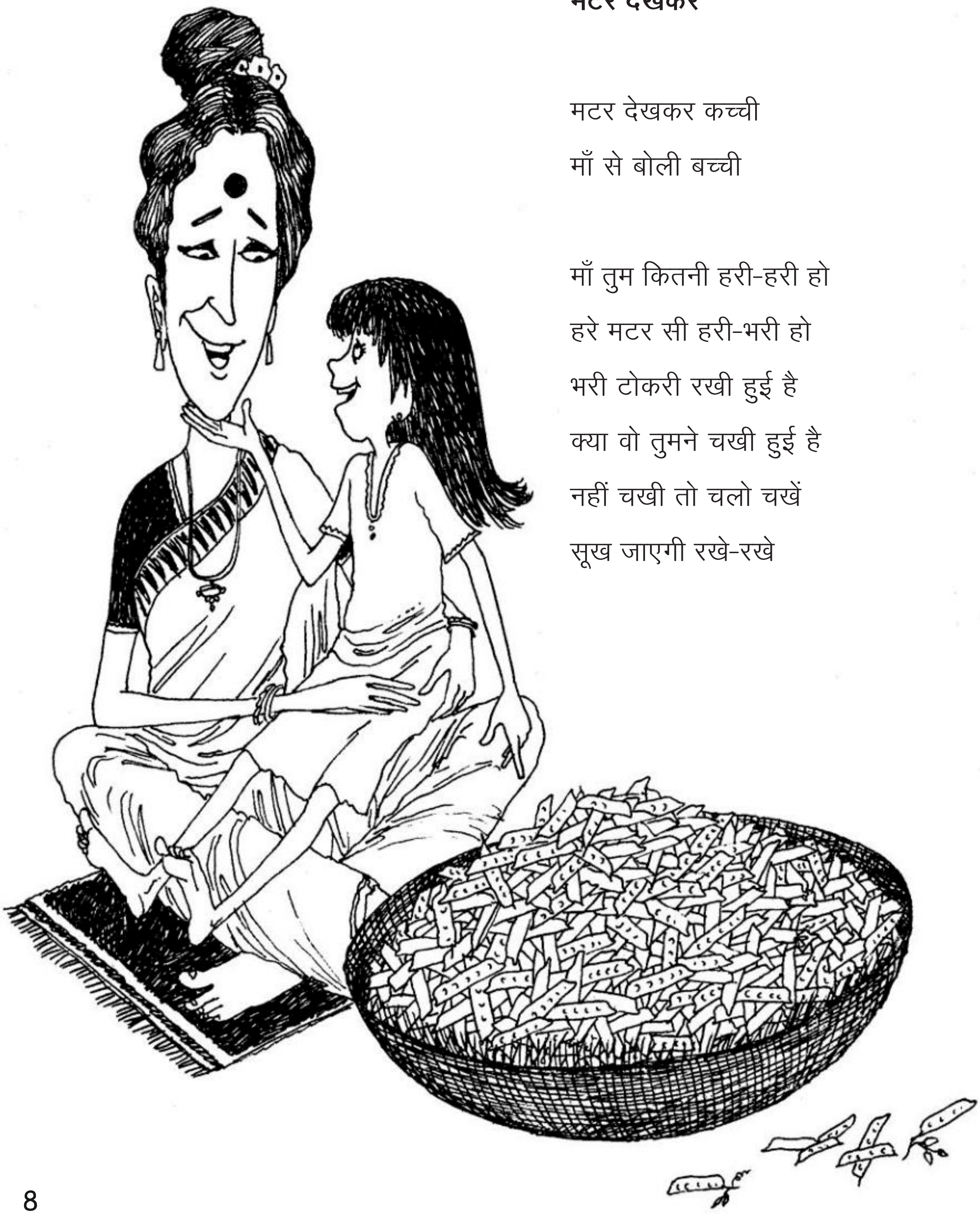

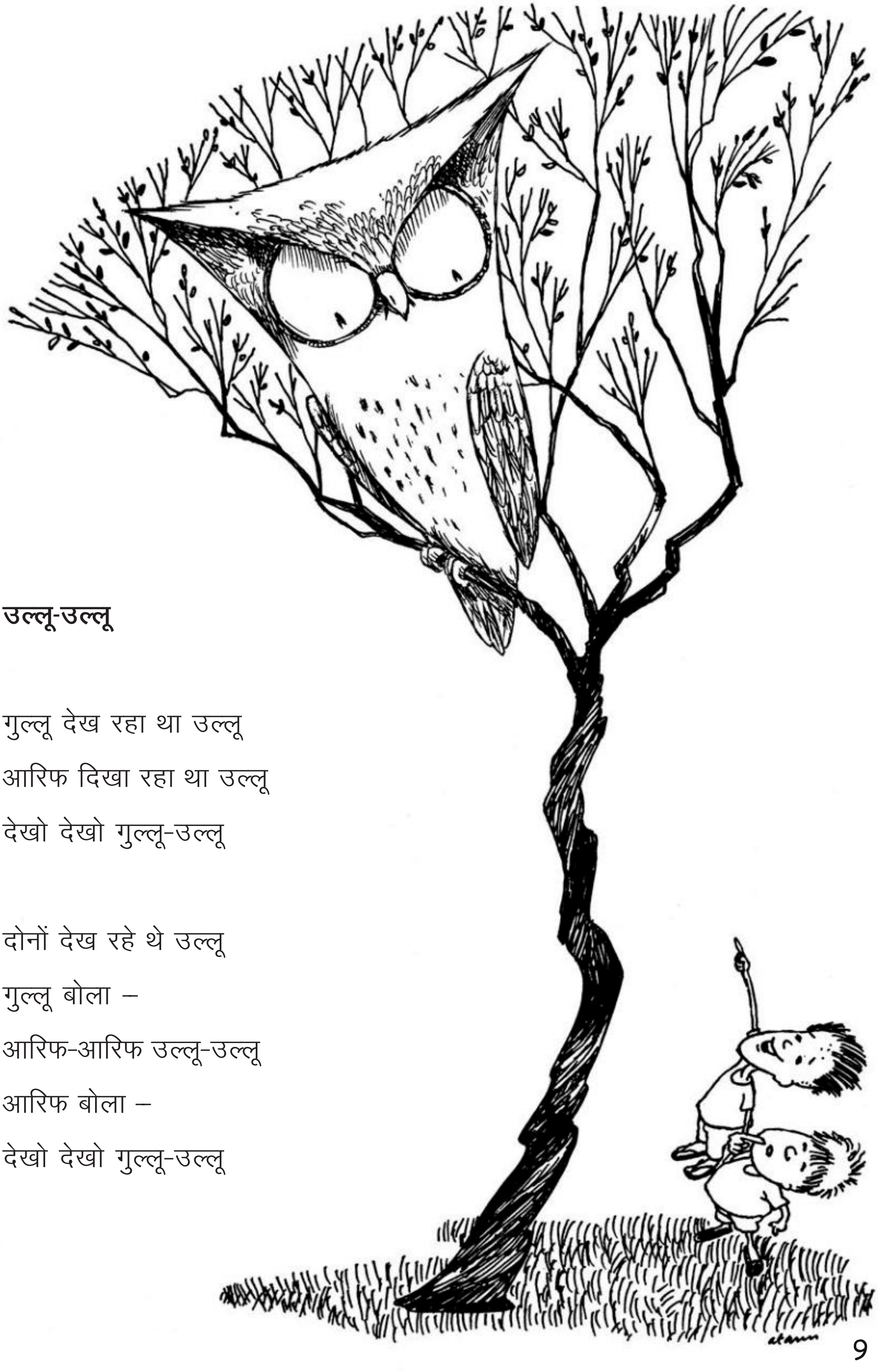

उल्लू-उल्लू

गुल्लू देख रहा था उल्लू
आरिफ दिखा रहा था उल्लू
देखो देखो गुल्लू-उल्लू

दोनों देख रहे थे उल्लू
गुल्लू बोला –
आरिफ-आरिफ उल्लू-उल्लू
आरिफ बोला –
देखो देखो गुल्लू-उल्लू

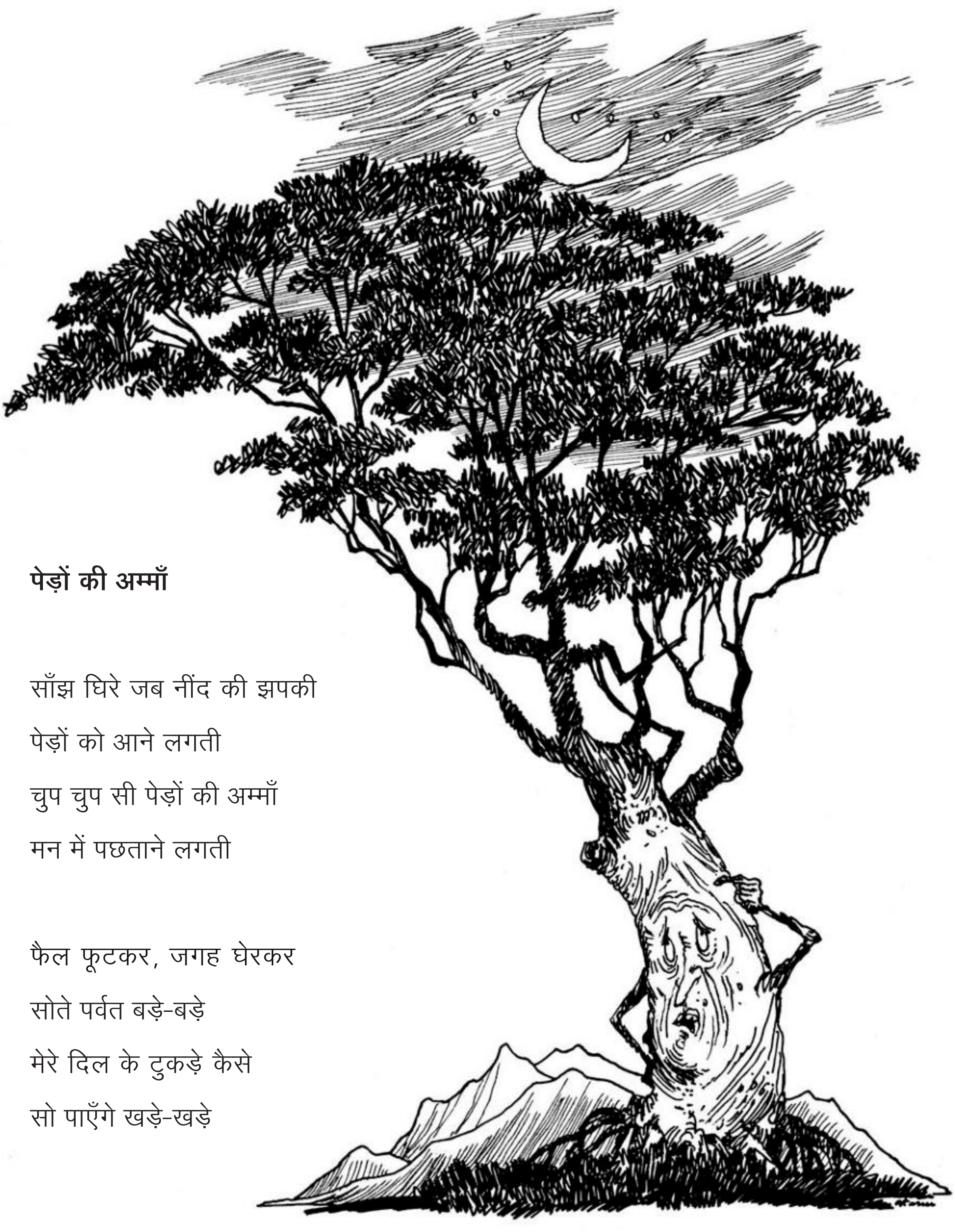

पेड़ों की अम्माँ

साँझ घिरे जब नींद की झपकी
पेड़ों को आने लगती
चुप चुप सी पेड़ों की अम्माँ
मन में पछताने लगती

फैल फूटकर, जगह घेरकर
सोते पर्वत बड़े-बड़े
मेरे दिल के टुकड़े कैसे
सो पाएँगे खड़े-खड़े

मेला रेला

क्या खूब मिठाई
मेले में
बेचे हलवाई
मेले में
फिरकी और झूले
मेले में
गुब्बारे फूले
मेले में
हल्ला और गुल्ला
मेले में
आरिफ अब्दुल्ला
मेले में
बरसा जो पानी
मेले में

सब ठेले बह गए
रेले में
हाथी और घोड़े
रेले में
सब गरम पकौड़े
रेले में
तब मचा बवेला
मेले में
पड़ गया झमेला
मेले में
आए थे हम तो
मेले में
पर लौट रहे हैं
रेले में

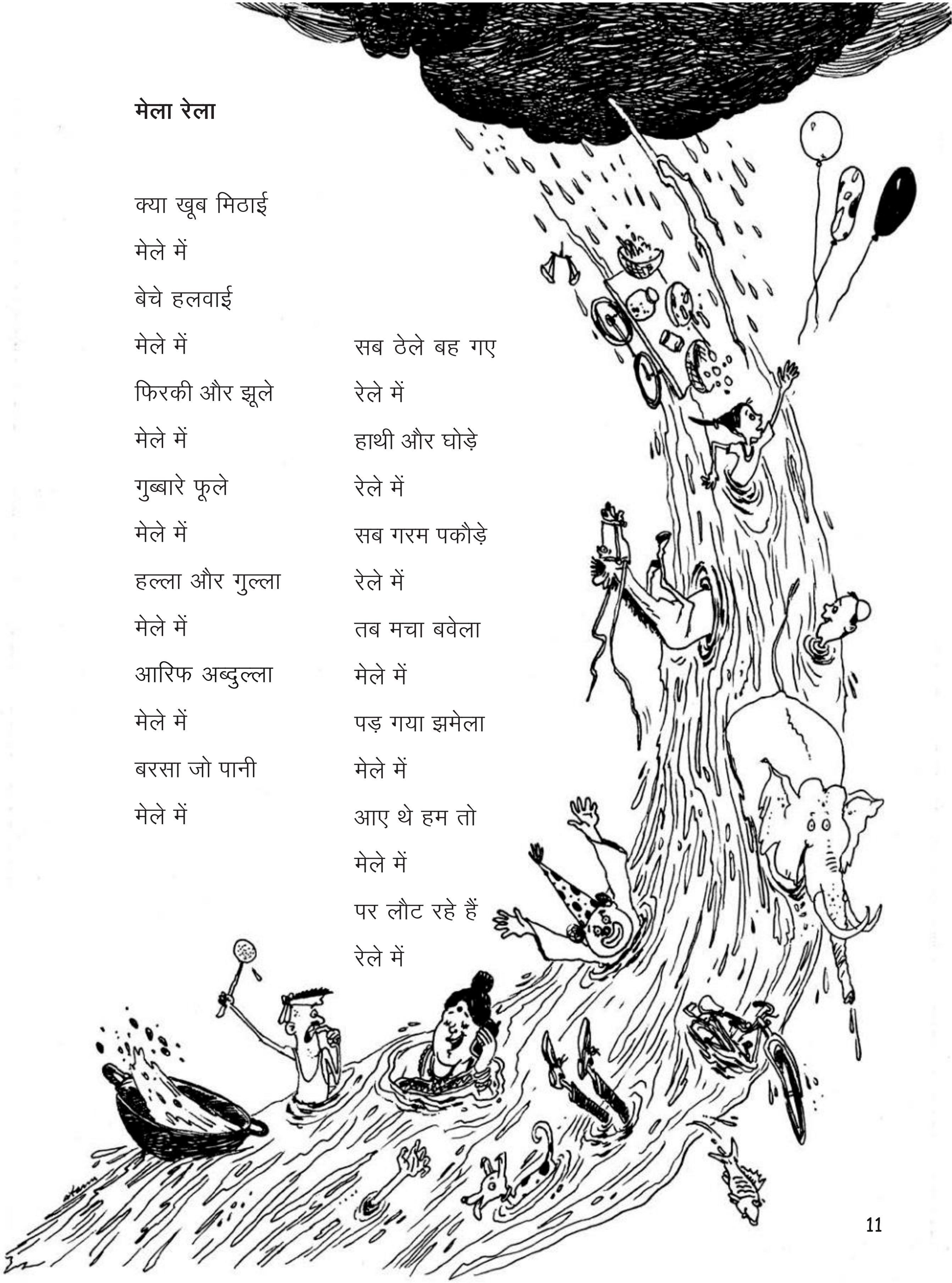

हाथी आया गाँव में

हाथी आया गाँव में
हाथी आया हाथी आया
सब चिल्लाए गाँव में

उपले पाथ रही थी काकी
बोली देखो देखो हाथी

काका दौड़ा-दौड़ा आया
अरे महावत हाथी लाया

लगी बताने बूढ़ी दादी
बड़े दिनों में आया हाथी

हाथी आया गाँव में
बच्चे देख रहे हाथी को
दूर खड़े हो छाँव में

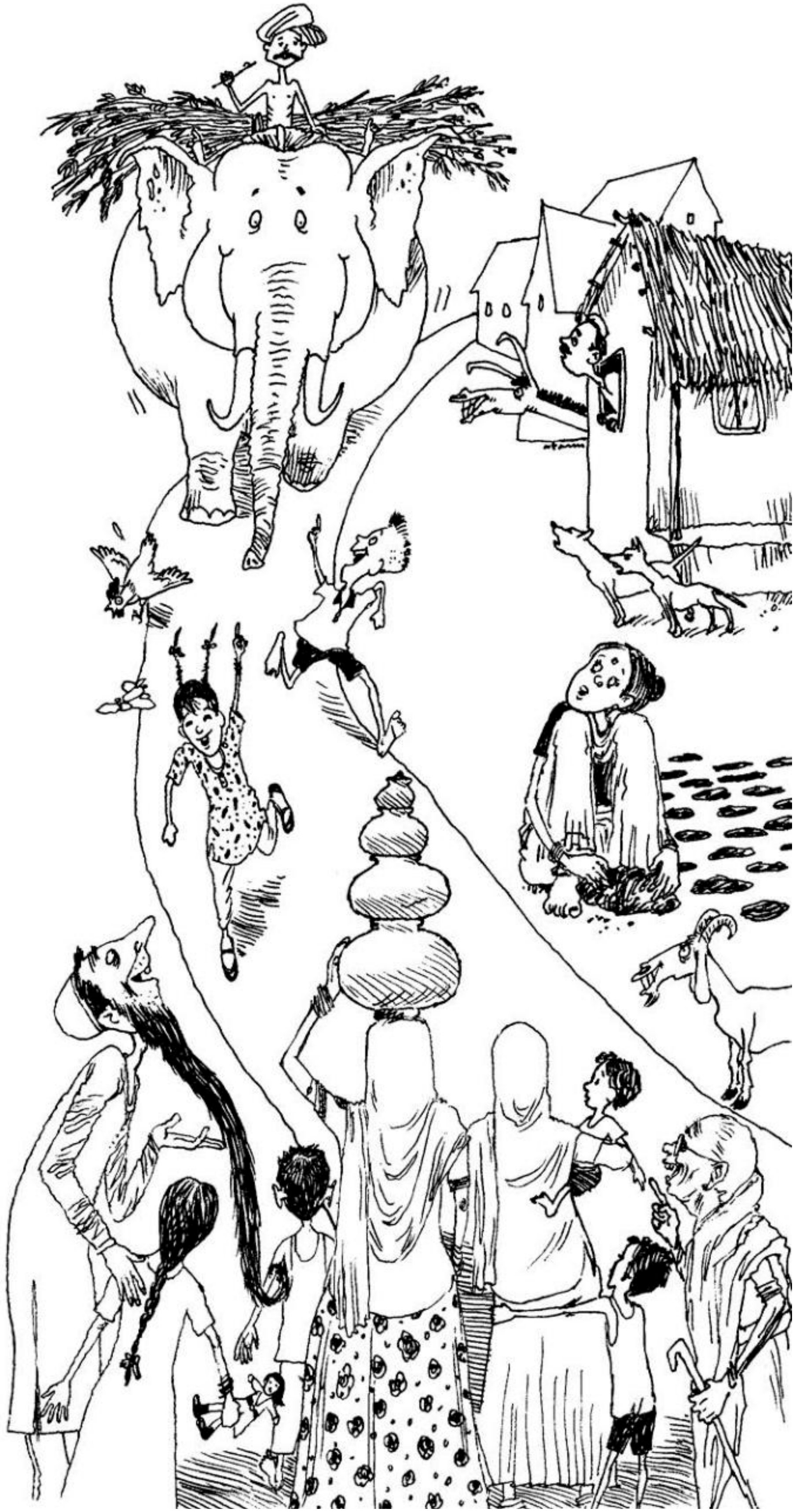

हरे हरे फल

हरी हरी डालियों में
हरे हरे फल
फलों में भरा है मीठा
रस छल-छल

हाथी पूरा पेड़ माँगे
हिरन माँगे पत्ते
हरे हरे तोते माँगें
फल कच्चे-कच्चे

हरी हरी डालियों में
हरे हरे फल
हवा झूला दे रही है
झूल रहे फल

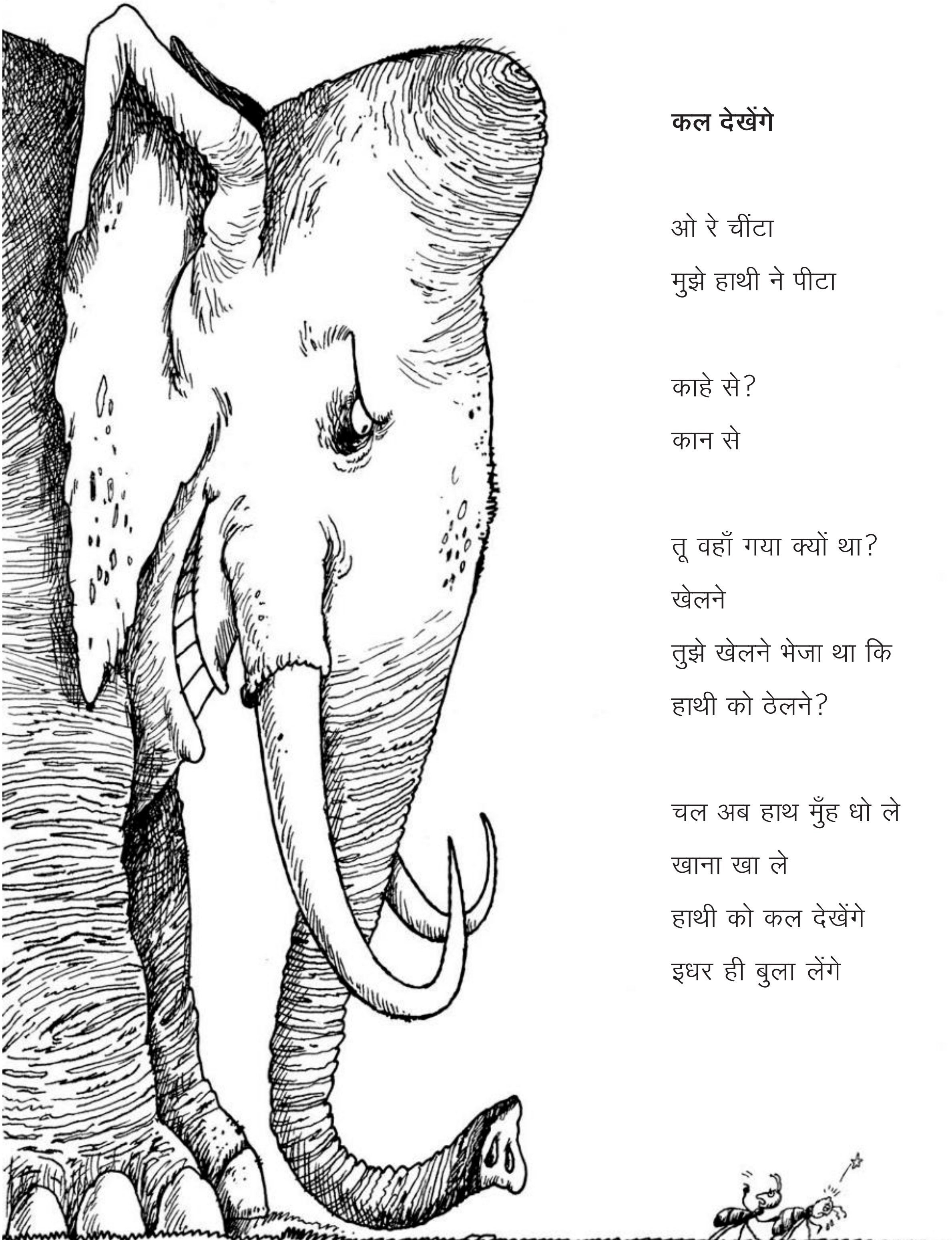

कल देखेंगे

ओ रे चींटा
मुझे हाथी ने पीटा

काहे से?
कान से

तू वहाँ गया क्यों था?
खेलने
तुझे खेलने भेजा था कि
हाथी को ठेलने?

चल अब हाथ मुँह धो ले
खाना खा ले
हाथी को कल देखेंगे
इधर ही बुला लेंगे

मिट्टी की गुड़िया

मिट्टी की गुड़िया में
लचक कमरिया में
झालर है लहँगे में
सितारे चुनरिया में
गुड़िया हँसे जो हँसी
रखी थी बिजुरिया में
अटरिया से एक दिन गिरी
उदासी नगरिया में

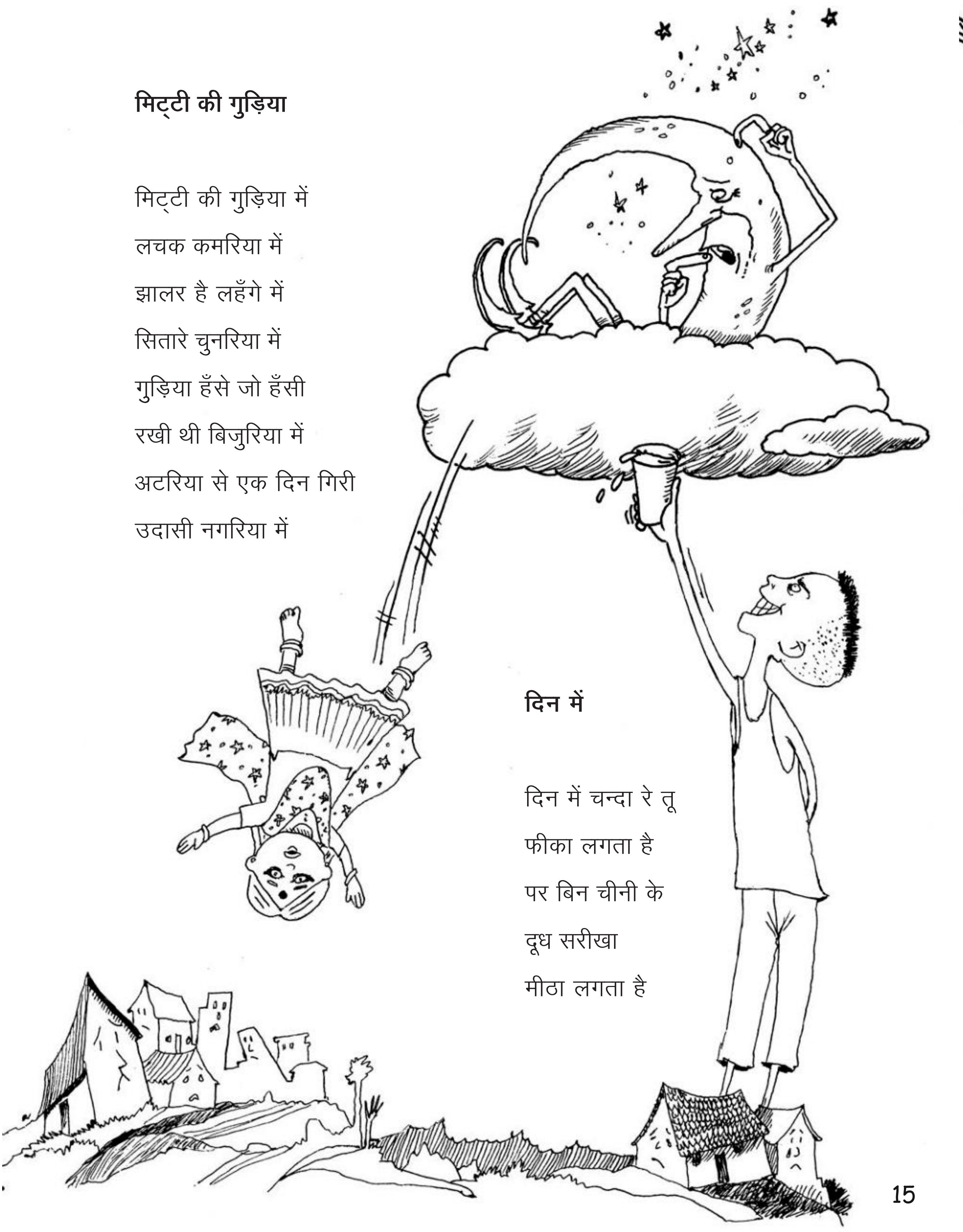

दिन में

दिन में चन्दा रे तू
फीका लगता है
पर बिन चीनी के
दूध सरीखा
मीठा लगता है

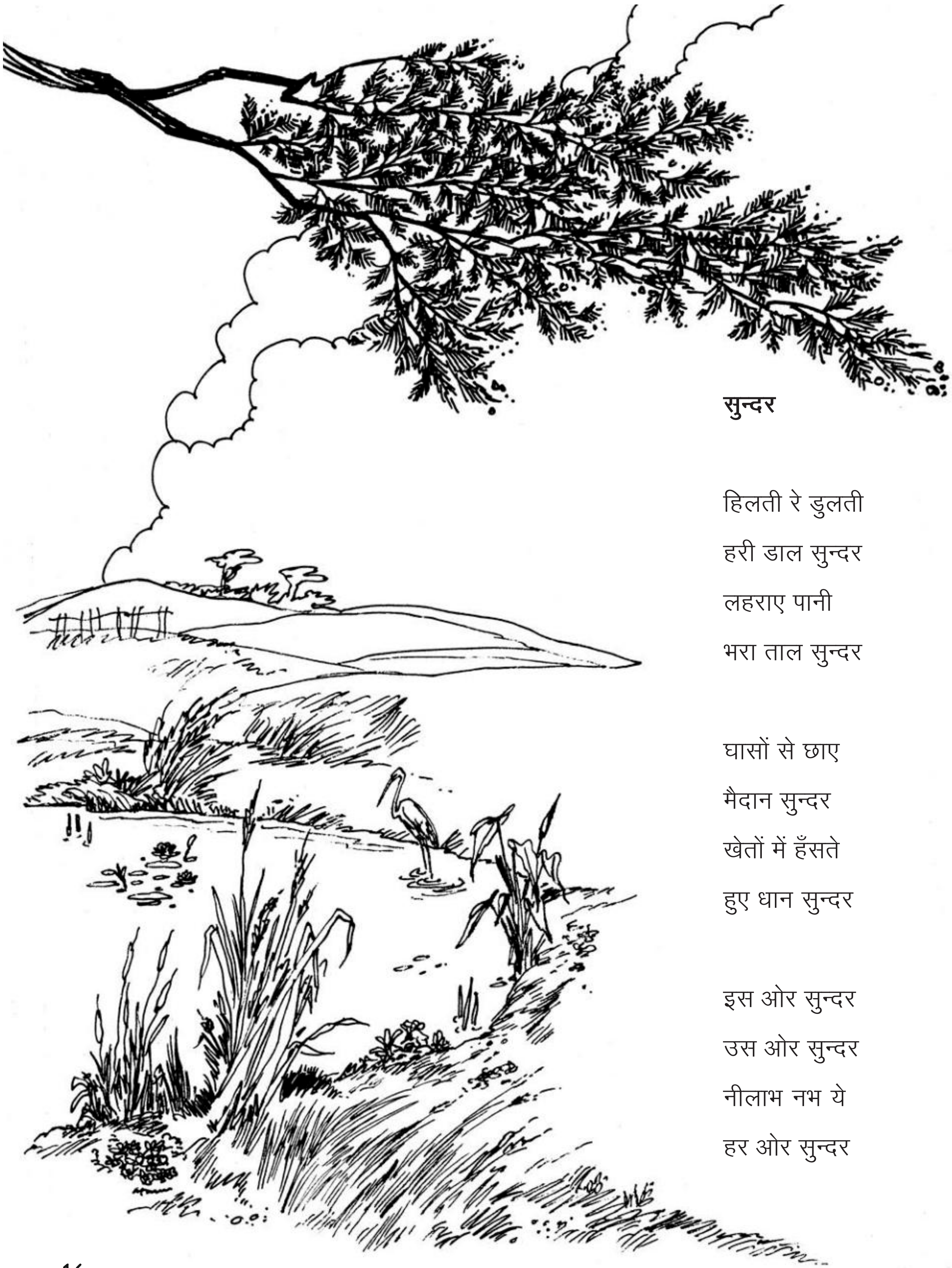

सुन्दर

हिलती रे डुलती
हरी डाल सुन्दर
लहराए पानी
भरा ताल सुन्दर

घासों से छाए
मैदान सुन्दर
खेतों में हँसते
हुए धान सुन्दर

इस ओर सुन्दर
उस ओर सुन्दर
नीलाभ नभ ये
हर ओर सुन्दर

बोल रही है

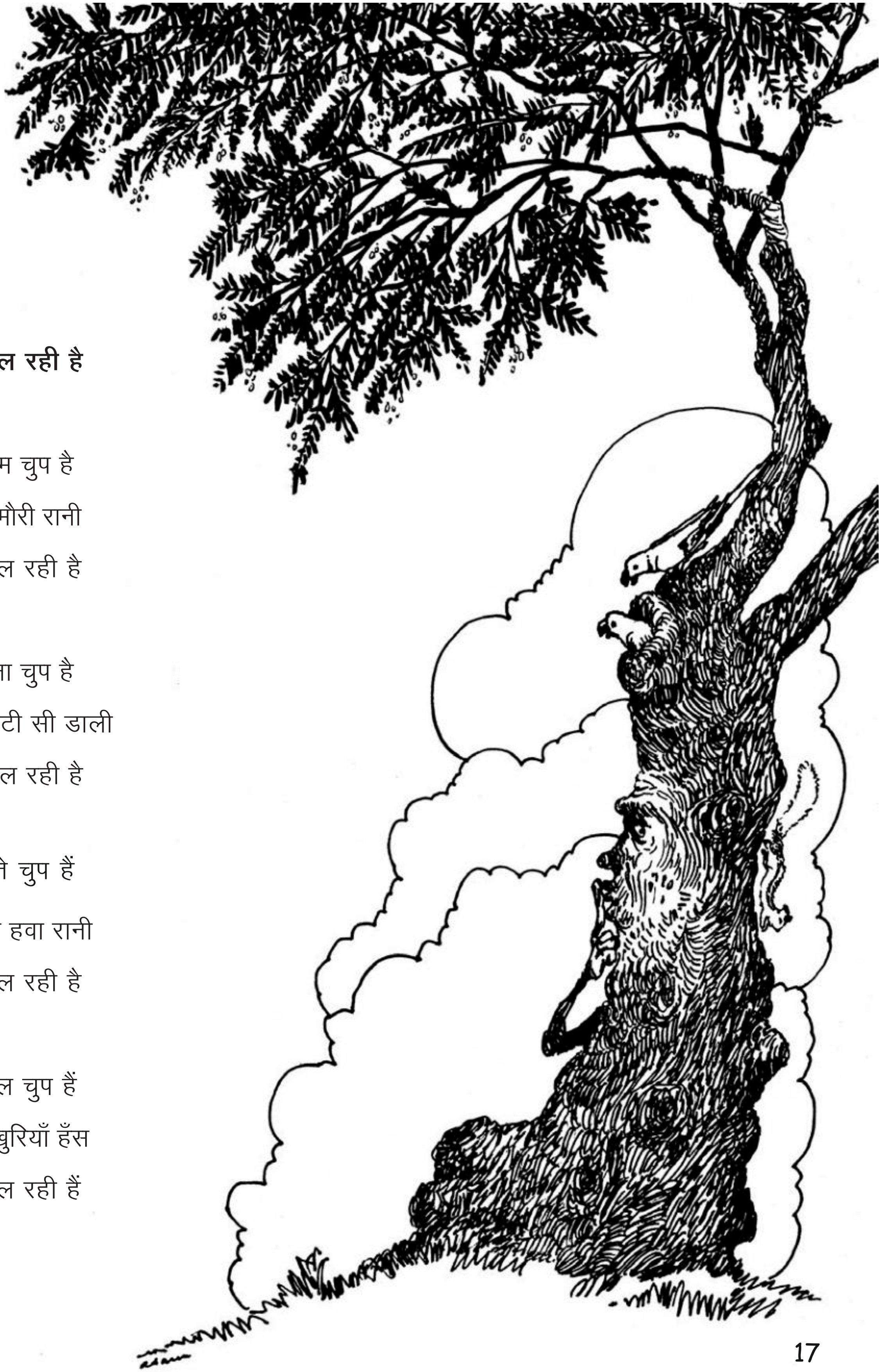

नीम चुप है
निमौरी रानी
बोल रही है

तना चुप है
छोटी सी डाली
डोल रही है

पत्ते चुप हैं
पर हवा रानी
बोल रही है

फूल चुप हैं
पँखुरियाँ हँस
बोल रही हैं

टोकरों में खेलेंगे

मामीजी की चिट्ठी आई
मामाओं के चलेंगे
वहाँ आम के टोकरे हैं
टोकरों में खेलेंगे
टोकरों में बैठ-बैठकर
खूब लुढ़कते डोलेंगे
मीठे पीले आम रसीले
बिन पूछे ही खा लेंगे

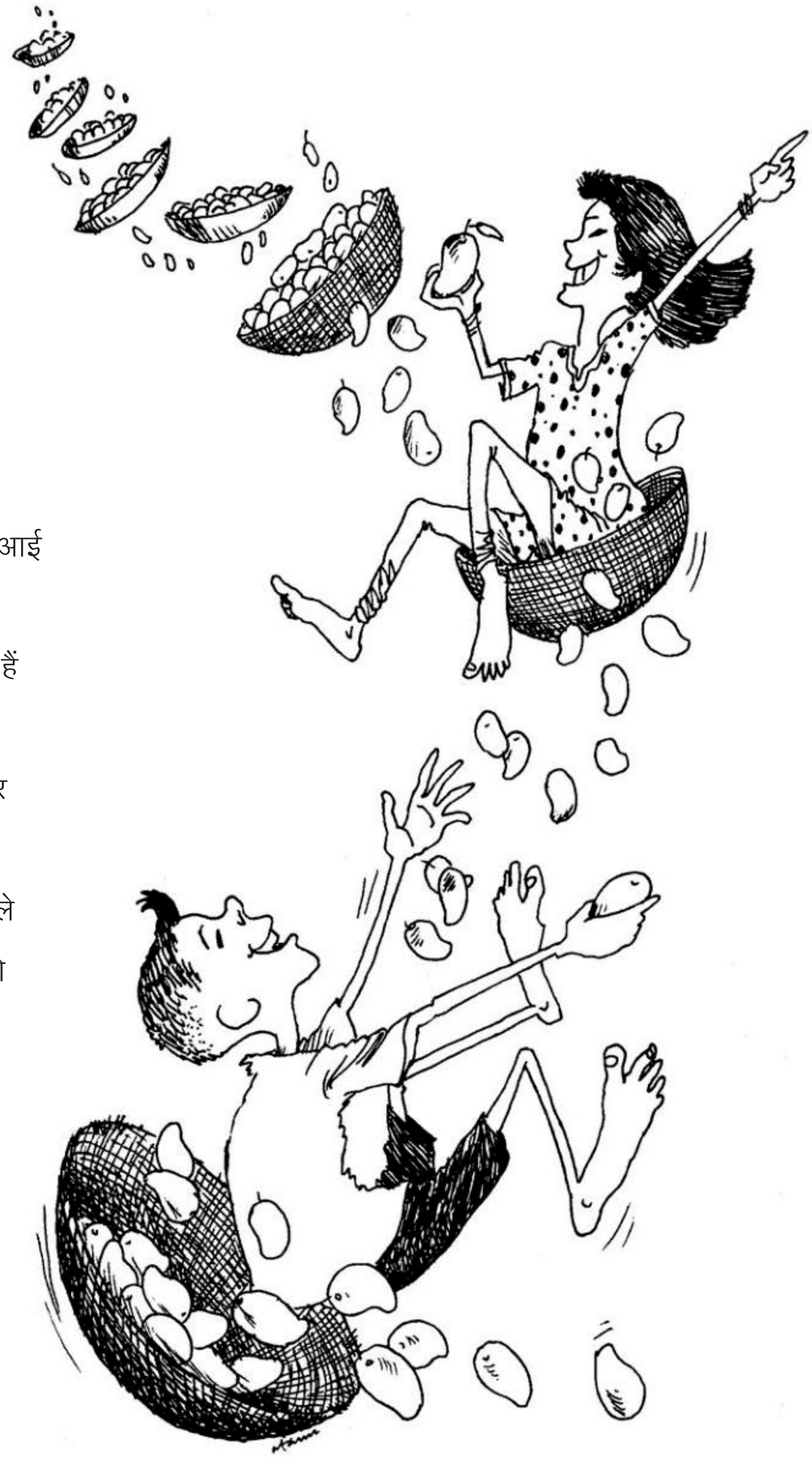

दूध से बनी रोशनी

घोर अँधेरा है
सारी छतों पर
सितारों के घर हैं
पर्वतों के ऊपर

बादलों की झाड़ियों में
रोशनी का डेरा है
हरा सा गुलाबी सा ये
चाँद का बसेरा है

चाँद के दरवाज़े को
चलो खटखटाएँ
दूध से बनी रोशनी
छतों पर बुलाएँ

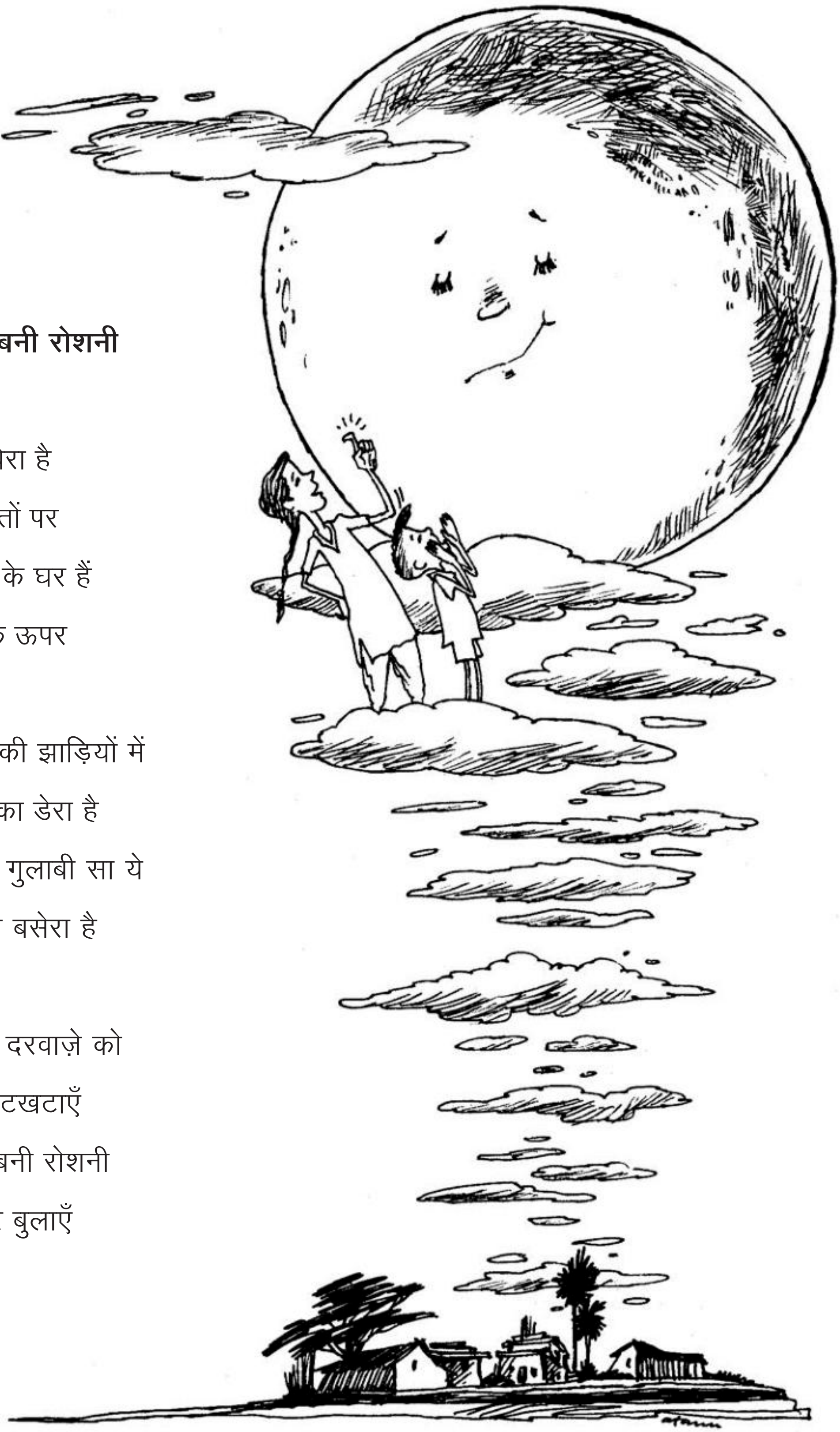

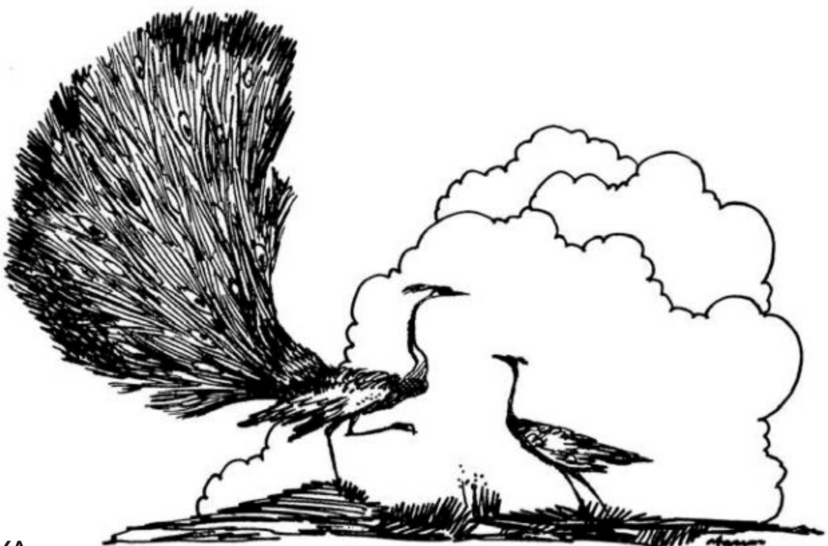

मेघ की छाया
MEGH KI CHHAYA
प्रभात
कलाः अतनु रॉय

कविताएँ © प्रभात
चित्र © अतनु रॉय

संस्करणः जून 2011 / 5000 प्रतियाँ
कागज़ः 100 gsm मेपलिथो और 200 gsm पेपरबोर्ड (कवर)
पराग इनिशिएटिव, सर रतन टाटा ट्रस्ट के वित्तीय सहयोग से विकसित
ISBN: 978-81-89976-76-7
मूल्यः ₹ 22.00

प्रकाशकः एकलव्य
ई-10, शंकर नगर बीडीए कॉलोनी
शिवाजी नगर, भोपाल - 462 016 (म. प्र.)
फोनः (0755) 255 0976, 267 1017 फैक्सः (0755) 255 1108
www.eklavya.in
सम्पादकीयः books@eklavya.in
किताबें मँगवाने के लिएः pitara@eklavya.in

मुद्रक, मेश प्रिन्ट्स भोपाल, फोनः (0755) 257 5521

प्रभात

प्रभात हिन्दी के चर्चित कवि हैं। एक ही कविता को बच्चों-बड़ों दोनों के लिए सार्थक बनाने का तिलिस्म उन्हें आता है। बच्चों के साथ गपशप के शौकीन। सरल-सहज प्रभात शौकिया चित्रकार भी हैं। दर्जन भर किताबें प्रकाशित। फिलहाल बच्चों की पत्रिका *मोरंगे* देखते हैं। और कविता-बच्चे-सवाई माधोपुर की तिकोनी पतंग उड़ा रहे हैं।

अतनु रॉय

पिछले चार दशकों से भी अधिक समय से चित्रांकन में लीन। बच्चों की चित्रकथाओं पर काम करना इनके कैरियर का सबसे ज़्यादा सन्तोषजनक हिस्सा रहा है। विभिन्न शैलियों और माध्यमों का उपयोग करते हुए इन्होंने सौ से भी ज़्यादा बच्चों की किताबों का चित्रांकन किया है। पुस्तकों का रूपांकन व चित्रांकन करने और कार्टून बनाने के साथ ही उद्योग जगत के लिए ग्राफिक डिज़ाइनिंग भी करते हैं। अनेक राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कारों से सम्मानित।

एकलव्य एक स्वैच्छिक संस्था है जो पिछले कई वर्षों से शिक्षा एवं जनविज्ञान के क्षेत्र में काम कर रही है। एकलव्य की गतिविधियाँ स्कूल में व स्कूल के बाहर दोनों क्षेत्रों में हैं।

एकलव्य का मुख्य उद्देश्य ऐसी शिक्षा का विकास करना है जो बच्चे से व उसके पर्यावरण से जुड़ी हो; जो खेल, गतिविधि व सृजनात्मक पहलुओं पर आधारित हो। अपने काम के दौरान हमने पाया है कि स्कूली प्रयास तभी सार्थक हो सकते हैं जब बच्चों को स्कूली समय के बाद, स्कूल से बाहर और घर में भी, रचनात्मक गतिविधियों के साधन उपलब्ध हों। किताबें तथा पत्रिकाएँ इन साधनों का एक अहम हिस्सा हैं।

पिछले कुछ वर्षों में हमने अपने काम का विस्तार प्रकाशन के क्षेत्र में भी किया है। बच्चों की पत्रिका *चकमक* के अलावा *स्रोत* (विज्ञान एवं टेक्नॉलॉजी फीचर्स) तथा *शैक्षणिक संदर्भ* (शैक्षिक पत्रिका) हमारे नियमित प्रकाशन हैं। शिक्षा, जनविज्ञान एवं बच्चों के लिए सृजनात्मक गतिविधियों के अलावा विकास के व्यापक मुद्दों से जुड़ी किताबें, पुस्तिकाएँ, सामग्रियाँ आदि भी एकलव्य ने विकसित एवं प्रकाशित की हैं।

वर्तमान में एकलव्य मध्य प्रदेश में भोपाल, होशंगाबाद, पिपरिया, हरदा, देवास, इन्दौर, उज्जैन, शाहपुर (बैतूल) व परासिया (छिन्दवाड़ा) में स्थित कार्यालयों के माध्यम से कार्यरत है।

इस किताब की सामग्री एवं सज्जा पर आपके सुझावों का स्वागत है। इससे आगामी किताबों को अधिक आकर्षक, रुचिकर एवं उपयोगी बनाने में हमें मदद मिलेगी।

सम्पर्क: books@eklavya.in

ई-10, शंकर नगर बीडीए कॉलोनी, शिवाजी नगर, भोपाल - 462016

चाँद के दरवाज़े को चलो, खटखटाएँ!

प्रभात की कविताएँ हमारी साझी यादों से बनी हैं। इन कविताओं में कुछ तो हम सबकी यादों के छोटे-छोटे टुकड़े हैं। और कुछ वे बातें भी हैं जिन्हें अभी याद हो जाना है। जैसे खूब सारे दोस्त एक-दूसरे से पीठ टिकाए, एक ही जगह बैठे अलग-अलग चीज़ों को देख रहे हों। इन कविताओं को गुनगुनाते हैं तो लगता है जैसे हम पहले देखी हुई चीज़ों को, वाकयों को दुब्बारा देख रहे हैं।

ये कविताएँ ही क्या, दुनिया की कोई भी चीज़ बिना साझे के खूबसूरत हो सकती है?

ISBN: 978-81-89976-76-7

9 788189 976767

मूल्यः ₹ 22.00

A0204H

parag SRTT के वित्तीय सहयोग से विकसित